एक परदेसी मेरा दिल ले गया, जाते जाते . . .

डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

हिंदी सिनेमा के स्वर्णिम दौर के गीतकारों की चर्चा हो और 'ओम प्रकाश भंडारी' (लोकप्रिय नाम - 'क़मर जलालाबादी') का नाम न आए, ऐसा संभव नहीं है। क़मर जलालाबादी एक महान गीतकार और शायर थे, उन्होंने अपने गीतों में ज़िन्दगी के विभिन्न अहसासों को इतनी ख़ूबसूरती से पिरोया कि उनके लिखे गीत कई पीढ़ियों की स्मृतियों का हिस्सा बन गए.

क़मर जलालाबादी का जन्म पंजाब के जलालाबाद में हुआ था. बचपन से ही उन्हें कविता और शायरी में रुचि थी. मात्र सात वर्ष की उम्र से वे उर्दू में शायरी करने लगे थे. शुरुआत में उन्हें परिवार से लेखन के लिए प्रोत्साहन नहीं मिला, लेकिन उनकी मुलाकात अमर चंद 'अमर' नाम के एक घुमक्कड़ कवि से हुई. उन्होंने ओम प्रकाश की प्रतिभा को पहचाना और उन्हें 'क़मर', जिसका अर्थ होता है चांद, तखल्लुस दिया. उस दौर की परंपरा के अनुसार, उन्होंने अपने नाम के आगे अपने जन्मस्थान का नाम जोड़ा और इस तरह वे क़मर जलालाबादी के नाम से मशहूर हुए. युवावस्था में उन्होंने पत्रकारिता भी की और लाहौर के विभिन्न समाचार-पत्रों से जुड़े. उन्होंने लाहौर के प्रसिद्ध अखबारों दैनिक मिलाप, दैनिक प्रताप और निराला में एक पत्रकार और संपादक के रूप में काम किया. पत्रकारिता के साथ साथ उनकी शायरी की पहचान भी लगातार बढ़ती गई.

1940 के दशक की शुरुआत में उनका रुझान फिल्मों की ओर हुआ और उनके भीतर का कवि उन्हें फिल्म इंडस्ट्री की ओर खींच लाया. वर्ष 1942 में आई पंचोली स्टूडियो की संगीतकार गुलाम हैदर की फिल्म 'ज़मींदार' से उन्हें गीतकार के रूप में पहला बड़ा अवसर मिला. इस फिल्म में उनका लिखा गीत 'दुनिया में गरीबों को आराम नहीं मिलता' काफ़ी लोकप्रिय हुआ और यहीं से उनकी फिल्मी गीतकार के रूप में पहचान बनने लगी. इसके बाद उन्होंने पुणे के प्रभात स्टूडियो से जुड़कर रामशास्त्री ,चाँद और गोकुल जैसी फिल्मों के लिए गीत और संवाद लिखे. 1946 के आसपास वे बंबई चले आए और हिंदी फिल्म उद्योग में उनका लंबा और सफल सफर शुरू हुआ.उनके लिखे फ़िल्म 'प्यार की जीत' के गीत 'इक दिल के टुकड़े हज़ार हुए, कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा' और फ़िल्म 'बड़ी बहन' के गीत 'वो पास रहें या दूर रहें' ने देश भर में धूम मचा दी गई. इसके बाद वे फ़िल्मिस्तान से जुड़े और उनकी आठ फिल्मों ने एक कतार से सिल्वर जुबली मनाई.

फिल्म बड़ी बहन, प्यार की जीत, पहली तारीख, शहीद, शबनम, हावड़ा ब्रिज,सिन्दूर, गूँज उठी शहनाई, वारिस, रुस्तम सोहराब, हरियाली और रास्ता, छलिया, हिमालय की गोद में, उपकार, महुआ आदि उनकी यादगार फ़िल्में हैं.

क़मर जलालाबादी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी गीत-लेखन की बहुमुखी प्रतिभा थी. उन्हें गमगीन ग़ज़लों से लेकर चुलबुले और मस्ती भरे गीतों तक, गीत लेखन की हर शैली में महारत हासिल थी. वे एक ओर गंभीर और भावुक गीत लिख सकते थे, तो दूसरी ओर बेहद चंचल और हास्यपूर्ण गीत भी उतनी ही सहजता से लिख लेते थे. फिल्म 'बड़ी बहन' (1949) के उनके गीतों में प्रेम और विरह की भावनाएँ दिखाई देती हैं, जबकि फ़िल्म 'पहली तारीख' (1954) का किशोर कुमार की आवाज़ में लोकप्रिय गीत 'खुश है जमाना आज पहली तारीख है' उनकी हास्य और रोजमर्रा की मस्ती भरी जिंदगी को गीत में ढालने की क्षमता का शानदार उदाहरण है. यह गीत लंबे समय तक हर महीने की पहली तारीख को रेडियो पर सुनाई देता रहा और आज भी नौकरी पेशा लोगों का पसंदीदा गीत है. इसी प्रकार फ़िल्म 'प्यार की जीत' (1948) का रफी साहब का गाया गीत 'इक दिल के टुकड़े हज़ार हुए, कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा' हर टूटे हुए दिल की आवाज बन गया. फ़िल्म 'सजन' (1947) का 'ठंडी ठंडी रेत में खजूर के

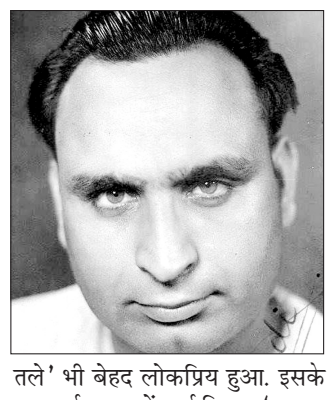

तले' भी बेहद लोकप्रिय हुआ. इसके बाद वर्ष 1958 में आई फिल्म 'हावड़ा ब्रिज' ने तो क़मर जलालाबादी की लोकप्रियता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया. इस फिल्म के दो गीत विशेष रूप से यादगार हैं — 'मेरा नाम चिन चिन चूँ' और 'आइए मेहरबान, बैठिए जाने-जाँ'. इन गीतों में एक ओर मस्ती, लय और चुलबुलापन है तो दूसरी ओर शब्दों की ऐसी सरलता है जो तुरंत श्रोता के मन में उतर जाती है. इसी प्रकार 'एक परदेसी मेरा दिल ले गया' (फागुन), 'डम डम डिगा डिगा' (छलिया) , 'मैं तो एक ख्वाब हूँ' (हिमालय की गोद में), 'मोहब्बत ज़िंदा रहती है, मोहब्बत मर नहीं सकती' (चंगेज़ खान) जैसे गीत उनके विविध रचनात्मक व्यक्तित्व को सामने लाते हैं.

क़मर जलालाबादी ने अपने लंबे करियर में अनेक प्रमुख संगीतकारों के साथ काम किया. इनमें एस. डी. बर्मन, अनिल बिस्वास, मदन मोहन, सी. रामचंद्र, ओ. पी. नैयर, कल्याणजी-आनंदजी, रवि, शंकर-जयकिशन जैसे संगीतकार शामिल थे. खासकर 'कल्याणजी-आनंदजी' के साथ मिलकर उन्होंने राज कपूर और मनोज कुमार जैसे सितारों के लिए बेहद गहरे और लोकप्रिय गाने लिखे, 'डम डम डिगा डिगा, मौसम भीगा भीगा' (छलिया), 'छलिया मेरा नाम, छलना मेरा काम' (छलिया), 'मेरे टूटे हुए दिल से, कोई तो आज ये पूछे' (छलिया), 'दीवानों से ये मत पूछो, दीवानों पर क्या गुजरी है' (उपकार), 'मैं तो एक ख्वाब हूँ, इस ख्वाब से तू प्यार ना कर' (हिमालय की गोद में) आदि इस जोड़ी के प्रमुख गीत हैं .

लगभग चार दशकों के अपने फिल्मी सफर में उन्होंने 155 फिल्मों के लिए 700 से अधिक गीत लिखे. उनके लिखे यादगार गीतों में 'ऐ चाँद बता मुझको, क्या इसी का नाम मोहब्बत है' (चाँद), 'हाय रे उड़-उड़ जाये मोरा रेशमी दुपट्टवा ' (मिर्ज़ा साहिबाँ), 'शहीदों तुमको मेरा सलाम' (बाज़ार), 'इक दिल के टुकड़े हजार हुए', 'ओ दूर जाने वाले वादा न भूल जाना' (प्यार की जीत), 'मोहब्बत का हाथ, जवानी का पल्ला' (हावड़ा ब्रिज), 'ईंट की डुक्की पान का इक्का' (हावड़ा ब्रिज), 'वो पास रहें या दूर रहें' (बड़ी बहन), 'दिन है सुहाना आज पहली तारीख है' (पहली तारीख), 'आइए मेहरबान, बैठिए जाने-जाँ', 'मेरा नाम चिन चिन चूँ' (हावड़ा ब्रिज), 'एक परदेसी मेरा दिल ले गया' (फागुन), 'तेरी राहों में खड़े हैं दिल थाम के' (छलिया), 'मैं तो एक ख़्वाब हूँ, इस ख़्वाब से तू प्यार न कर' (हिमालय की गोद में), 'तू है मेरा प्रेम देवता' (कल्पना), 'दोनों ने किया था प्यार मगर' (महुआ), 'गुनी जनो, भक्त जनो' (आंसूऔर मुस्कान), 'राही मतवाले, तू छेड़ एक तार' (वारिस), 'मेरे टूटे हुए दिल से कोई तो आज ये पूछे' (छलिया), 'डम डम डिगा डिगा, मौसम भीगा भीगा ', 'छलिया मेरा नाम' (छलिया), 'पिया पिया ना लागे मोरा जिया' (फागुन), 'छोटा सा बालमा, अंखियां नींद चुराये ले गयो' (रागिनी), 'तू दिल मेरा लाउटा दे' (माई बाप), 'दीवानों से ये मत पूछो, दीवानों पर क्या गुजरी है' (उपकार), 'मोहब्बत ज़िंदा रहती है, मोहब्बत मर नहीं सकती' (चंगेज़ खान), 'ये कैसी अजब दास्तान हो गई है, छुपाते-छुपाते बयाँ हो गई है' (रुस्तम सोहराब) आदि गीत शामिल हैं .

संगीतकार ओ पी नैयर के संगीत से सजी फ़िल्म 'निश्चय' (1992) उनकी आखिरी फ़िल्म थी. उन्होंने दूरदर्शन के बेहद लोकप्रिय धारावाहिक 'विक्रम और बेताल' का शीर्षक गीत भी लिखा था.

क़मर जलालाबादी की गीत-भाषा उनकी लोकप्रियता का महत्वपूर्ण कारण थी. उनकी शायरी में उर्दू की मिठास थी, लेकिन शब्द इतने सहज और आम बोलचाल के होते थे कि आम श्रोता भी उनसे आसानी से जुड़ जाता था. उनके लिखे प्रेम के गीतों में नज़ाकत, विरह गीतों में दर्द, हास्य गीतों में चुटीलापन और दार्शनिक गीतों में जीवन की गहरी समझ, ये सब दिखाई देता है.

क़मर जलालाबादी केवल फिल्मी गीतकार ही नहीं थे, वे एक गंभीर शायर भी थे और देश के विभिन्न हिस्सों में मुशायरों में शिरकत करते थे. वे फिल्म राइटर्स एसोसिएशन और इंडियन परफॉर्मिंग राइटर्स से जुड़े संगठनों के संस्थापक सदस्यों में भी शामिल रहे.

उनकी रचनात्मक यात्रा बदलते हुए हिंदी सिनेमा के साथ चलती रही. 1970 और 1980 के दशक में भी वे सक्रिय रहे और नई पीढ़ी के संगीतकारों तथा फिल्मों के लिए गीत लिखते रहे. उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि ये है कि उनके गीत किसी एक भाव या एक शैली में बंधे हुए नहीं हैं. यही कारण है कि 'मेरा नाम चिन चिन चूँ' जैसी चुलबुली रचना और 'एक परदेसी मेरा दिल ले गया' जैसे भावपूर्ण गीत एक ही गीतकार की रचनात्मक दुनिया का हिस्सा हैं.

स्वभाव से वे बेहद अनुशासित और धार्मिक प्रवृत्ति के इंसान थे, जो रोज़ गीता, क़ुरान और बाइबल की आयतों व श्लोकों का पाठ करते थे. आज क़मर जलालाबादी हमारे बीच नहीं हैं, वो उन गीतकारों में हैं जिन्होंने हिंदी सिनेमा के गीतों को केवल मनोरंजन नहीं माना , बल्कि उन्हें उस दौर की जिंदगी, भावनाओं और सामाजिक वातावरण का दस्तावेज बना दिया. उनके लिखे गीत रेडियो, ग्रामोफोन रिकॉर्ड, संगीत-संग्रहों और श्रोताओं की स्मृतियों में उसी आत्मीयता के साथ आज भी जीवित हैं.

आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी, तब तक क़मर जलालाबादी साहब के यादगार गीत सुनिए और हमेशा ख़ुश रहिये, हसते रहिये, मुस्कराते रहिये .

'गांधारी' ने बनाया नया नेटफ्लिक्स रिकॉर्ड

तापसी पन्नू अभिनीत नेटफ्लिक्स फिल्म 'गांधारी' ने वैश्विक स्तर पर नया रिकॉर्ड बनाया है. फिल्म ने रिलीज के दूसरे सप्ताह में 9.6 मिलियन व्यूज़ और 18.7 मिलियन वॉच ऑवर्स दर्ज किए हैं.नेटफ्लिक्स के आधिकारिक वैश्विक आंकड़ों के अनुसार, किसी भारतीय नेटफ्लिक्स ओरिजिनल फिल्म के लिए एक सप्ताह में यह सर्वाधिक व्यूअरशिप है. फिल्म नॉन-इंग्लिश फिल्मों के वैश्विक चार्ट में पहले स्थान पर पहुंच गई है. यह 17 देशों में नंबर एक पर ट्रेंड कर रही है, जबकि 58 देशों में शीर्ष 10 में शामिल है.

फिल्म ने पहले सप्ताह में 5.9 मिलियन व्यूज़ और 11.5 मिलियन वॉच ऑवर्स हासिल किए थे. दूसरे सप्ताह में इसकी व्यूअरशिप में उल्लेखनीय वृद्धि हुई.

'गांधारी' लेखिका और निर्माता कनिका ढिल्लों की नेटफ्लिक्स के साथ लगातार चौथी फिल्म है. वहीं, तापसी पन्नू और कनिका ढिल्लों की जोड़ी की यह तीसरी नेटफ्लिक्स फिल्म है. इससे पहले दोनों 'हसीन दिलरुबा' और 'फिर आई हसीन दिलरुबा' में साथ काम कर चुकी हैं. तापसी पन्नू ने कहा कि दुनियाभर में फिल्म को मिल रहा प्यार और लगातार बढ़ती व्यूअरशिप बेहद शानदार अनुभव है. उन्होंने कहा कि दर्शकों का फिल्म को शुरुआती प्रदर्शन से आगे लेकर जाना उनके साथ बने जुड़ाव को दर्शाता है. कनिका ढिल्लों ने दर्शकों का आभार जताते हुए कहा कि दूसरे सप्ताह में मिली जबरदस्त व्यूअरशिप इस बात का संकेत है कि दर्शकों ने फिल्म की कहानी को पसंद किया है. उन्होंने नेटफ्लिक्स और मोनिका शेरगिल का भारतीय कहानियों को समर्थन देने के लिए धन्यवाद किया. कथा पिक्चर्स निर्मित और देवाशीष मखीजा निर्देशित 'गांधारी' एक मां की कहानी है, जो अपने अपहृत बच्चे को बचाने के लिए तमाम मुश्किलों का सामना करती है. फिल्म दुनियाभर में नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम हो रही है.

दूसरे सप्ताह में मिले 9.6 मिलियन व्यूज़

सिद्धार्थ और तमन्ना की फिल्म 'द वन' का ट्रेलर रिलीज

सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया अभिनीत फिल्म 'द वन' का ट्रेलर जारी कर दिया गया है. एकता कपूर निर्मित और दीपक मिश्रा निर्देशित यह फिल्म भारतीय लोककथाओं और अलौकिक शक्तियों पर आधारित रहस्यमयी दुनिया की कहानी पेश करती है.फिल्म की कहानी अरुणाभ कुमार ने लिखी है. ट्रेलर में सिद्धार्थ और तमन्ना के किरदारों के साथ रहस्य, रोमांच और अलौकिक घटनाओं की झलक देखने को मिलती है. फिल्म का निर्माण शोभा कपूर, एकता आर कपूर, अरुणाभ कुमार और नीरज कोठारी ने किया है. बालाजी मोशन पिक्चर्स और द वायरल फीवर के सहयोग से बनी इस फिल्म को 11:11 प्रोडक्शंस से भी जोड़ा गया है. फिल्म की कहानी की दुनिया को विस्तार देने के लिए 'द लीजेंड ऑफ द वन' नामक कॉमिक भी पेश की गई है. कॉमिक के जरिए फिल्म के रहस्यमयी संसार और उसके किरदारों से जुड़ी कहानी को आगे बढ़ाया गया है. 'द वन' 25 सितंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

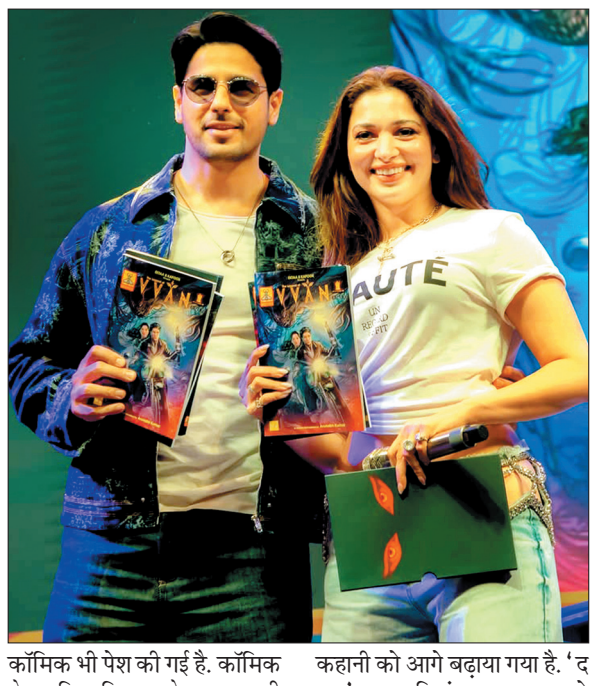

सीरियल न्यूज़

आठ साल बाद टीवी पर वापसी करेंगी रश्मि देसाई

अभिनेत्री रश्मि देसाई करीब आठ साल बाद टीवी फिक्शन में वापसी करने जा रही हैं. रश्मि देसाई स्टार प्लस के आगामी धारावाहिक 'सयोनी' में माया की भूमिका में नजर आएंगी. रश्मि ने बताया कि इस दौरान उन्हें कई टीवी शो के प्रस्ताव मिले, लेकिन उन्होंने ऐसे किरदार और कहानियों की तलाश में उन्हें स्वीकार नहीं किया, जिनसे वह खुद को जोड़ सकें. उन्होंने कहा कि वह सिर्फ टीवी पर वापसी करने के लिए वापसी नहीं करना चाहती थीं, बल्कि ऐसा किरदार निभाना चाहती थीं जिसे दर्शक लंबे समय तक याद रखें. रश्मि देसाई ने कहा, 'माया सिर्फ एक किरदार या कल्पना नहीं है. 'सयोनी' में मैं एक बहुत ही प्रैक्टिकल किरदार निभाने जा रही हूं. मुझे कई ऑफर्स मिले, लेकिन मैं उनसे खुद को जोड़ नहीं पा रही थी. 'सयोनी' में वह स्पार्क है, जिसकी मैं तलाश कर रही थी. मुझे लगता है कि इस शो की कहानी इसके कलाकारों से भी कहीं बड़ी है. सयोनी' में रश्मि देसाई के साथ जाह्नवी सोनी और गौतम सिंह विग भी नजर आएंगे. यह धारावाहिक 23 सितंबर से शाम 7 .30 बजे स्टार प्लस और जियोहॉटस्टार पर प्रसारित होगा.

ईशा रिखी ने बताई बादशाह से अलग होने की वजह

रैपर बादशाह और अभिनेत्री ईशा रिखी के रिश्ते को लेकर एक बार फिर चर्चा तेज हो गई है. दोनों ने कुछ समय पहले सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए अलग होने की जानकारी दी थी. हालांकि, अलगाव की वजह को लेकर दोनों ने सार्वजनिक रूप से कोई स्पष्ट बयान नहीं दिया था. अब 'बिग बॉस 20' में नजर आ रहीं ईशा रिखी ने कनिका मान के साथ बातचीत के दौरान रिश्तों को लेकर ऐसी बातें कही हैं, जिन्हें बादशाह के साथ उनके रिश्ते से जोड़कर देखा जा रहा है.

बातचीत में ईशा ने संकेत दिया कि किसी रिश्ते में सिर्फ साथ रहने या रिश्ता चाहने की इच्छा पर्याप्त नहीं होती. रिश्ते को आगे बढ़ाने के लिए जिम्मेदारियां निभाना और मुश्किल परिस्थितियों में साथ खड़ा रहना भी जरूरी है. उनकी बातों से ऐसा संकेत मिला कि रिश्ते में चाहत और जिम्मेदारी के बीच संतुलन का मुद्दा अहम था. हालांकि, ईशा ने बातचीत में बादशाह का नाम लेकर यह नहीं कहा कि उनका रिश्ता इसी वजह से खत्म हुआ.

अनंत नाग को दादासाहेब फाल्के पुरस्कार

जाने माने अभिनेता अनंत नाग को भारतीय सिनेमा में उनके उत्कृष्ट योगदान तथा कन्नड़ सिनेमा में कालजयी विरासत के लिए दादासाहेब फाल्के पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया जायेगा। केंद्र सरकार ने बुधवार को इसकी घोषणा की. एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि अनंत नाग को यह पुरस्कार दादासाहेब फाल्के पुरस्कार चयन समिति की सिफारिश पर दिया जा रहा है.

अनंत नाग को गुजरात के केवड़िया में 22 सितंबर को 72वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में इससे सम्मानित किया जायेगा. भारतीय सिनेमा में उनके 'उल्लेखनीय योगदान' तथा कन्नड़ सिनेमा में 'कालजयी विरासत' के सम्मान में उन्हें यह

पुरस्कार दिया जा रहा है. अनंत दशकों से कन्नड़ सिनेमा के जाने-माने कलाकार रहे हैं और उन्होंने दूसरी भारतीय भाषाओं की फ़िल्मों में भी काम किया है. उन्हें अपनी शानदार और अलग-अलग तरह के अभिनय एवं फिल्म जगत में लगातार योगदान के लिए पहचान मिली है. दादा साहब फाल्के पुरस्कार भारतीय सिनेमा के विकास और तरक्की में योगदान के लिए सरकार की ओर से दिया जाने वाला सबसे बड़ा सम्मान है. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अनंत को बधाई देते हुए कहा, 'दिग्गज कलाकार अनंत नाग जी को दादा साहब फाल्के अवॉर्ड मिलने पर बधाई. कई दशकों से, उनका सहज अभिनय, कमाल की विविधता और बेहतरीन हुनर ने भारतीय सिनेमा, खासकर कन्नड़ सिनेमा पर गहरी छाप छोड़ी है. उन्होंने जो भी किरदार निभाया, उसमें एक अनोखी गहराई और सच्चाई दिखाई. यह वाकई एक बेहतरीन कलाकार के लिए बहुत ही सही सम्मान है. अनंत का जन्म चार सितंबर 1948 को हुआ. उनका मुख्य योगदान कन्नड़ सिनेमा में रहा है, हालांकि वह हिंदी, तेलुगु, तमिल, मराठी, मलयालम और अंग्रेज़ी भाषाओं की कुछ फ़िल्मों में भी काम कर चुके हैं. उन्होंने थिएटर नाटकों, समानांतर सिनेमा और टेलीविज़न शो में भी काम किया है.

केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड यानी सीबीएफसी का भारत सरकार ने पुनर्गठन कर दिया है. बुधवार को गठित नई व्यवस्था में फिल्म और मनोरंजन जगत के साथ संगीत, साहित्य और कला क्षेत्र से जुड़े कुल 18 सदस्यों को शामिल किया गया है. नई सूची में अभिनेता पंकज त्रिपाठी, सुनील शेट्टी और मनोज जोशी जैसे चर्चित नाम हैं, वहीं अभिनेत्री प्रीति जिंटा, रूपाली गांगुली और पल्लवी जोशी को भी बोर्ड का हिस्सा बनाया गया है. इसके अलावा निर्देशक प्रियदर्शन, संगीतकार रिकी केज, गायक हंसराज हंस और लेखक यतींद्र मिश्रा समेत विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों को प्रतिनिधित्व दिया गया है. पुनर्गठित बोर्ड में विनोद अनुपम, मनोज जोशी, अभिषेक जैन, रिकी केज, प्रियदर्शन, सुनील शेट्टी, हंसराज हंस, सुप्रिया यार्लगड्डा, यतींद्र मिश्रा, रूपाली गांगुली, प्रीति जिंटा, नीला माधब पांडा, पंकज त्रिपाठी, प्रोसेंजीत चटर्जी, पल्लवी जोशी, निशिगंधा वाड, वामन केंद्रे और रमेश पतांगे शामिल हैं.

सेंसर बोर्ड में पंकज-प्रीति समेत 18 सदस्य हुए शामिल

दो बेटियां होना मेरे लिए डबल बोनस है : अनिल कपूर

बॉलीवुड अभिनेता अनिल कपूर का कहना है कि उनकी बेटियां सोनम और रिया उनके लिए डबल बोनस है.अनिल कपूर जल्द ही 'इंडिया के टॉप 1% : द अनिल कपूर शो' में नजर आएंगे. शो के दौरान एक प्रतिभागी ने परिवार को समय देने के लिए काम से ब्रेक लेने के अपने फैसले के बारे में बताया. इस पर अनिल ने अपने जीवन का एक भावुक अनुभव साझा किया. अनिल ने बताया कि जब रिया का जन्म हुआ था, तब वह लगातार शूटिंग कर रहे थे और अस्पताल देर से पहुंच पाए थे. उन्होंने कहा कि रिया के जन्म के समय वहां नहीं पहुंच पाने का उन्हें आज भी अफसोस है. अनिल कपूर ने कहा, 'बेटी का होना अपने आप में एक बोनस है और मेरी तो दो बेटियां हैं, सोनम और रिया. इसलिए मेरे लिए यह डबल बोनस है. 'उन्होंने कहा कि वह अब समझ रहे हैं कि परिवार को समय देना कितना महत्वपूर्ण है. अनिल के अनुसार, उनके दोनों दामाद भी अपने काम और परिवार के बीच अच्छा संतुलन बनाते हैं. इंडिया के टॉप 1 प्रतिशत में अनिल कपूर के साथ दर्शकों को उनके पारिवारिक और भावुक पक्ष की झलक भी देखने को मिलेगी. शो में 100 प्रतिभागी हिस्सा लेंगेस

कृति खरबंदा के हिंदी सिनेमा में 10 साल

अभिनेत्री कृति खरबंदा ने हिंदी सिनेमा में अपने सफर के दस साल पूरे कर लिये हैं. वर्ष 2016 में 'राज़ रीबूट' से हिंदी फिल्मों में शुरुआत करने के बाद कृति ने अलग-अलग शैलियों और भूमिकाओं में काम किया. कृति ने 'गेस्ट इन लंदन', 'शादी में जरूर आना', 'हाउसफुल 4', 'पागलपंती' और '14 फेरे' जैसी फिल्मों में अभिनय किया. हॉरर, रोमांस, कॉमेडी और ड्रामा जैसी विभिन्न शैलियों में काम करते हुए उन्होंने अपने किरदारों में विविधता दिखाई. उन्होंने खुद को किसी एक तरह की भूमिका तक सीमित नहीं रखा. रिश्तों और भावनाओं पर आधारित कहानियों के साथ-साथ मल्टीस्टारर मनोरंजक फिल्मों का भी हिस्सा बनीं. कृति ने ओटीटी पर भी कदम रखा और 'राणा नायडू' के दूसरे सीजन में नजर आयीं. इसके साथ उन्होंने लंबे फॉर्मेट की कहानी में काम करने का अनुभव हासिल किया. राज़ रीबूट' से शुरू हुआ कृति का हिंदी सिनेमा का सफर अब एक दशक पूरा कर चुका है. इस दौरान उन्होंने फिल्मों और ओटीटी के जरिए अलग-अलग किरदारों को पर्दे पर उतारा है.